

दिल्ली राजपत्र Delhi Gazette

असाधारण

EXTRAORDINARY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 109]

दिल्ली, शुक्रवार, जून 22, 2012/आषाढ़ 1, 1934

[रा.रा.रा.क्षे.दि. सं. 71

No. 109]

DELHI, FRIDAY, JUNE 22, 2012/ASADHA 1, 1934

[N.C.T.D. No. 71

भाग—IV

PART—IV

राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र दिल्ली सरकार

GOVERNMENT OF THE NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI

विधि, न्याय एवं विधायी कार्य विभाग

कहा जाए।

अधिसूचना

दिल्ली, 22 जून, 2012

सं. फा. 14(5)/एलए-2012/कनस-2लॉ/83.—राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा के निम्नलिखित अधिनियम ने उप-राज्यपाल की सहमति दिनांक 19 जून, 2012 को प्राप्त कर ली है और इसके द्वारा जन साधारण की जानकारी के लिये प्रकाशित किया जाता है :—

“दिल्ली विलासिता कर (संशोधन) अधिनियम, 2012

(2012 का दिल्ली अधिनियम 08)

(6 जून, 2012 को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा द्वारा यथा पारित)

[19 जून, 2012]

दिल्ली विलासिता कर अधिनियम, 1996 को पुनः संशोधित करने के लिए अधिनियम।

भारत गणराज्य के तिरसठवें वर्ष में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा द्वारा निम्नानुसार अधिनियमित किया जाए :—

1. संक्षिप्त शीर्षक, विस्तार एवं प्रारम्भ.—(1) इस अधिनियम को दिल्ली विलासिता कर (संशोधन) अधिनियम, 2012

2270 DG/2012

(1)

(2) यह सम्पूर्ण राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में विस्तारित होगा।

(3) यह उस तारीख से प्रभावी होगा जो तारीख सरकार, सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे।

2. धारा 2 का संशोधन.—विलासिता कर अधिनियम, 1996 में (इसके पश्चात् “मूल अधिनियम” के रूप में संदर्भित), की धारा 2 में—

(i) खण्ड (क) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड सन्निविष्ट किया जाएगा, अर्थात् :—

“(कक) “बैन्कट हॉल” का अर्थ है ऐसा कोई परिसर, बगीचा या फार्म हाउस या उसका कोई भाग जहाँ आवास या स्थल, विवाह, रिसेप्शन या उससे संबंधित समारोह, सेमिनार, संगोष्ठी, दावत, पार्टी, बैठक या प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए उपलब्ध कराया गया हो तथा ऐसा अन्य हॉल जो आयुक्त द्वारा यथाविनिर्दिष्ट किया गया हो, इस तथ्य का ध्यान रखे बिना कि चाहे वह नियमित हो या आवधिक या यदा कदा के आधार पर हो;”;

(ii) खण्ड (ख) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

- “(ख) “व्यापार” में मौद्रिक प्रतिफल के लिए किसी प्रकार की विलासिता तथा उससे संबंधित या आनुवंशिक या प्रासंगिक के संदर्भ में कोई विलासिता उपलब्ध कराना शामिल है;”;
- (iii) खण्ड (ड.) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(ड.) “रियायती दर” किसी होटल में उपलब्ध कराई गई विलासिता के संदर्भ में रियायती दर का अर्थ है स्वामी द्वारा ऐसी विलासिता के लिए नियत सामान्य दर से कम दर या तत्समय लागू सरकार, प्राधिकरण या विधि के अधीन नियत से कम दर;”;
- (iv) खण्ड (ड.) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड सन्निविष्ट किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(ड.क) “उपभोक्ता” का अर्थ है व्यक्तिगत या समूह या कंपनी अथवा कॉर्पोरेट जो विलासिता का उपयोग कर रहा है;
- “(ड.ख) “स्थापना” का अर्थ है, कोई बैंक हॉल या व्यायामशाला/स्वास्थ्य क्लब या होटल या कोई स्पा जहां किसी उपभोक्ता को व्यापार के द्वारा विलासिता उपलब्ध कराई जाती है;”;
- (v) खण्ड (च) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड सन्निविष्ट किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(चक) “व्यायामशाला या स्वास्थ्य क्लब” का अर्थ है, अच्छी सेहत, एरोबिक्स या बॉडी बिल्डिंग या शरीर सज्जा इत्यादि जैसी सुविधाएं और गतिविधियां उपलब्ध कराने के लिए जिम अथवा अन्य शारीरिक व्यायाम उपकरणों के लिए परिसर, हॉल, भवन या उपकरणों से सुसज्जित कोई स्थान;”;
- (vi) खण्ड (ज) को हटाया जाएगा;
- (vii) खण्ड (झ) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(झ) “विलासिता” का अर्थ है, किसी उपभोक्ता द्वारा जीवन की आवश्यकता के लिए असाधारण रूप से किसी उपभोक्ता द्वारा मनोरंजन या सुविधा या प्रसन्नता या उपभोग के लिए वस्तुएं, सेवाएं, संपत्ति सुविधाएं इत्यादि का प्रयोग, अर्थात् :—
- (i) किसी बैंक हॉल में उपलब्ध कराया गया कोई आवास या स्थल जिसमें ठंडी हवा, वातानुकूलन, कुर्सियों, मेज, लिनन, बर्तन तथा पात्र, शामियाना, टेंट, पैवेलियन, बिजली, पानी, ईंधन, आन्तरिक या बाह्य सज्जा, संगीत, ऑरकेस्ट्रा, सीधा प्रसारण और इसी तरह की अन्य सुविधा सम्मिलित हैं;
- (ii) व्यायामशाला या स्वास्थ्य क्लब में उपलब्ध सेवाएं जिसमें प्रशिक्षक अथवा व्यक्तिगत प्रशिक्षक की सेवा, स्टीम, सॉना तथा इसी तरह की अन्य सेवाएं सम्मिलित हैं;
- (iii) किसी होटल में आवास तथा अन्य सेवाएं, जिसके लिए दर या प्रभार में ठंडी हवा, वातानुकूलन, रेडियो, संगीत, अतिरिक्त बिस्तरे, दूरदर्शन तथा इसी तरह की अन्य सेवाएं सम्मिलित हैं, सात सौ पचास रुपये प्रति कमरा प्रतिदिन या अधिक हो, चाहे ऐसा प्रभार एकत्रित रूप से अलग-अलग रूप से प्रति कक्ष प्रतिदिन प्राप्त किया गया हो;
- (iv) किसी स्पा में उपलब्ध सुविधाएं या सेवाएं जिसमें सौन्दर्य, उपचार, मैनीक्योर, पैडीक्योर, फेसियल, लेजर उपचार, मालिश, शॉवर, जल चिकित्सा, भाप स्नान, सॉना अथवा व्यंजन, मैडीस्पा तथा इसी तरह की अन्य सेवाएं सम्मिलित हैं;”;
- (vii) खण्ड (झ) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड सन्निविष्ट किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(झक) “स्वामी” का अर्थ है, किसी स्थापना का संयुक्त या पृथक रूप से मालिक तथा इसमें साझेदार, प्रबंधन, न्यास, कंपनी, फर्म या कोई भी सम्मिलित है, जो कि तत्समय स्थापना के प्रबंधन का प्रभारी हो;”;
- (ix) खण्ड (ड) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(ड) “प्राप्ति” का अर्थ है, स्थापना में उपलब्ध कराई गई किसी विलासिता के लिए किसी स्वामी अथवा उसके एजेंट द्वारा प्राप्त अथवा प्राप्त किए जाने योग्य मौद्रिक प्रतिफल की राशि;”;
- (x) खण्ड (ढ) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(ढ) “पंजीकृत स्वामी” का अर्थ है, इस अधिनियम की धारा 8 के अधीन पंजीकृत स्वामी;”;
- (xi) खण्ड (ण) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड सन्निविष्ट किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(णक) “स्पा” का अर्थ है कि कोई भवन या उसका कोई भाग या स्थान जहां पर सौन्दर्य उपचार अथवा मैनीक्योर या पैडीक्योर या फेसियल या लेजर उपचार या मालिश या शॉवर या जल चिकित्सा या भाप स्नान, सॉना या व्यंजन या मैडीस्पा या इसी तरह की अन्य सेवाएं उपलब्ध हों;”;
- (xii) खण्ड (त) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—
- “(त) “कर” का अर्थ है, किसी स्थापना में प्राप्तियों की सकल बिक्री पर वसूला गया या वसूली योग्य कर

तथा इस अधिनियम के अधीन भुगतान योग्य कर जिसमें कोई अर्थदंड, ब्याज, दंड, समाधान राशि, जब्त की गई राशि या इस अधिनियम के अधीन वसूला गया या वसूली योग्य अन्य कोई प्रभार;";

(xiii) खण्ड (थ) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

"(थ) "प्रभार" का अर्थ है विलासिता उपलब्ध कराने के लिए किसी स्वामी द्वारा वसूला गया या वसूली योग्य प्रभार;";

(xiv) खण्ड (द) के स्थान पर निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

"(द) "प्राप्तियों की सकल बिक्री" का अर्थ है किसी विलासिता के संबंध में स्वामी द्वारा वसूल किया गया अथवा वसूली योग्य मूल्य योग्य प्रतिफल की सकल राशि;";

3. धारा 3 का संशोधन.—मूल अधिनियम के धारा 3 के स्थान पर निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

"3. कर की वसूली और विस्तार.—(1) इस अधिनियम के अन्य उपबंधों के अनुसार प्रत्येक स्वामी, जो—

(क) इस अधिनियम के अधीन पंजीकृत हो, अथवा

(ख) इस अधिनियम के अधीन पंजीकृत किया जाना अपेक्षित हो;

इस अधिनियम के उपबंधित समय तथा पद्धति से इस अधिनियम के अनुसार परिकलित प्राप्तियों की अपनी सकल बिक्रियों पर कर का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होगा।

(2) उस दर पर स्वामी की प्राप्तियों की कुल बिक्री पर कर वसूला जाएगा जो सरकार द्वारा समय-समय पर अधिसूचित किए जाने के लिए पन्द्रह प्रतिशत से अधिक न हो तथा विलासिताओं की विभिन्न श्रेणी के लिए विभिन्न दरें अधिसूचित की जा सकती हैं :

उपबंध है कि जहां दैनिक आधार या प्रति कक्ष आधार पर अन्यथा प्रभार वसूला जाता है तब इस आधार के अधीन कर देयता निश्चित करने के लिए प्रभार आवास के अधिभोग की कुल अवधि पर आधारित एक दिन के लिए तथा प्रतिकक्ष अनुपातिक रूप से परिकलित होगा जिसके लिए होटल के नियमों तथा पद्धति के अनुसार प्रभार लिया जाएगा।

(3) यदि विलासिता उपलब्ध कराने के लिए प्रभारों के अतिरिक्त सेवा प्रभार वसूला जाता है तथा स्वामी द्वारा विनियुक्त किया जाता है तथा स्टाफ को भुगतान नहीं किया जाता है तब ऐसे प्रभारों को इस अधिनियम के अधीन कर की वसूली के उद्देश्य के लिए प्राप्तियों की

कुल बिक्री का भाग समझा जाएगा।

(4) यदि किसी व्यक्ति को होटल में दी गई विलासिता (जो स्वामी का कर्मचारी न हो) का प्रभार बिल्कुल नहीं वसूला जाता या रियायती दर पर प्रभारित किया जाता है, निःसन्देह उस विलासिता पर उप-धारा (2) में विनिर्दिष्ट दर पर ऐसी विलासिता पर कर वसूला और एकत्रित किया जाएगा, मानो ऐसी विलासिता के लिए पूरा प्रभार स्वामी को भुगतान किया गया था।

(5) खाद्यान्न, पेय पदार्थों तथा वस्तुओं जैसे सौन्दर्य प्रसाधन, औषधियां, पौष्टिक पूरक, आहार इत्यादि की आपूर्ति के लिए प्राप्तियों की कुल बिक्री के संबंध में कर नहीं लगाया जाएगा और भुगतान योग्य नहीं होगा, जिसकी बिक्री पर स्वामी, दिल्ली मूल्य संवर्धित कर अधिनियम, 2005 के अधीन कर भुगतान करने के लिए उत्तरदायी है।

(6) इस अधिनियम के उद्देश्यों के लिए स्वामी द्वारा पृथक् रूप से एकत्रित कर प्राप्ति या प्राप्तियों की सकल बिक्री के भाग के रूप में नहीं समझा जाएगा।"

4. धारा 8 का संशोधन.—मूल अधिनियम के धारा 8 की उप-धारा (1) को उप-धारा (7) के रूप में पुनः संख्यांकित किया जाएगा, निम्नलिखित उप-धारा, उप-धारा (1) के रूप में सन्निविष्ट की जाएगी, अर्थात् :—

"(1) प्रत्येक स्वामी जिसकी किसी प्रकार की विलासिता उपलब्ध कराने तथा उसके आनुषंगिक प्रभारों के लिए किसी वर्ष के प्रारंभ होने से परिकलित प्राप्तियों की कुल बिक्री निम्नानुसार विनिर्दिष्ट मूल्य से अधिक होती है, को अगले दिन से ही उसे इस अधिनियम के अधीन पंजीकृत किया जाना आवश्यक होगा :—

क्र. सं.	विलासिता कर	प्रारंभिक मूल्य (रुपये में)
1	बैंकट हाल सुविधाएं	पाँच लाख
2	व्यायामशाला/स्वास्थ्य क्लब	पाँच लाख
3	प्रतिदिन प्रतिकक्ष 750/- रुपये या इससे अधिक प्रभार सहित होटल आवास	शून्य
4	स्पा	पाँच लाख

उपबंध है किसी स्वामी के होटल में आवास का प्रभार एक हजार या इससे अधिक प्रतिकक्ष प्रतिदिन है तथा जिसकी पिछले वर्ष कुल बिक्री या दिल्ली विलासिता कर (संशोधन) अधिनियम, 2012 के प्रारंभ होने के वर्ष में प्रारंभ होने की तारीख से पूर्व, कुल बिक्री उपरोक्त विनिर्दिष्ट प्रारंभिक मूल्य से अधिक है, वह उपरोक्त अधिनियम के प्रारंभ होने की तारीख से पंजीकरण कराने का उत्तरदायी होगा।"

5. शब्द "होटल" का प्रतिस्थापन.—मूल अधिनियम की धारा 2, धारा 3, और धारा 8 की उप-धारा (1) को छोड़कर इसमें आए शब्द "होटल", "कोई होटल" तथा "होटल" जहां कहीं ये शब्द आते हैं, उनके स्थान पर क्रमशः शब्द "स्थापना" "कोई स्थापना" तथा "स्थापनाएं" प्रतिस्थापित किए जाएंगे।

6. शब्द "होटलियर" का प्रतिस्थापन.—मूल अधिनियम की धारा 2, धारा 3 एवं धारा 8 की उप-धारा (1) को छोड़कर जहाँ कहीं शब्द "होटलियर" आता है, उसके स्थान पर शब्द "स्वामी" प्रतिस्थापित किया जाएगा।

चन्द्र शेखर, विशेष सचिव

**DEPARTMENT OF LAW, JUSTICE AND
LEGISLATIVE AFFAIRS**

NOTIFICATION

Delhi, the 22nd June, 2012

No. F. 14(5)/LA-2012/Cons2law/83.—The following Act of the Legislative Assembly of the National Capital Territory of Delhi received the assent of the Lt. Governor of Delhi on 19th June, 2012 and is hereby published for general information :—

**"THE DELHI TAX ON LUXURIES (AMENDMENT)
ACT, 2012**

(DELHI ACT 08 OF 2010)

(As passed by the Legislative Assembly of the National Capital Territory of Delhi on the 6th June, 2012)

[19th June, 2012]

An Act to further amend the Delhi Tax on Luxuries Act, 1996

Be it enacted by the Legislative Assembly of National Capital Territory of Delhi in the Sixty third Year of the Republic of India as follows:

1. Short title, extent and commencement.—(1) This Act may be called the Delhi Tax on Luxuries (Amendment) Act, 2012.

(2) It extends to the whole of the National Capital Territory of Delhi.

(3) It shall come into force on such date as the Government may by notification in the Official Gazette, appoint.

2. Amendment of Section 2.—In the Delhi Tax on Luxuries Act, 1996 (hereinafter referred to as the "principal Act"), in Section 2,—

(i) after clause (a), the following clause shall be inserted, namely :—

"(aa) "banquet hall" means any premises, garden or farm house, or any part thereof where accommodation or space is provided for marriage, reception or functions related therewith, seminar, convention, banquets, party, meeting, or exhibition-cum-sale and such other hall as may be specified by the Commissioner, irrespective of the fact whether on regular or periodical or occasional basis;"

(ii) for clause (b), the following clause shall be

substituted, namely :—

"(b) "business" includes activity of providing any luxury and any other service in connection with, or incidental or ancillary thereto for monetary consideration;"

(iii) for clause (e), the following clause shall be substituted, namely :—

"(e) "concessional rate" in relation to a luxury provided in a hotel, means a rate lower than the normal rate fixed for such luxury by the proprietor or lower than that fixed by any Government, authority or under law for the time being in force;"

(iv) after clause (e), the following clauses shall be inserted, namely :—

"(ea) "customer" means an individual or group or company or corporate availing any luxury;

(eb) "establishment" means a banquet hall or a gymnasium/health club or a hotel or a spa where luxury is provided to a customer by way of business;"

(v) after clause (f), the following clause shall be inserted, namely :—

"(fa) "gymnasium or health club" means a premises or hall or building or place equipped for gymnastics and other physical exercising equipment(s) for providing facilities and activities such as wellness, aerobics or body building or body sculpting etc;"

(vi) the clause (h) shall be omitted;

(vii) for clause (i), the following clause shall be substituted, namely:

"(i) "luxury" means use of goods, services, property, facilities etc. for enjoyment or comfort or pleasure or consumption by any customer extraordinary to the necessity of life, that is to say :—

(i) accommodation or space provided in a banquet hall which includes air cooling, air conditioning, chairs, tables, linen, utensils and vessels, shamiyana, tent, pavilion, electricity, water, fuel, interior or exterior decoration, music, orchestra, live telecast and the like;

(ii) services provided in a gymnasium or health club, which includes services of trainer or personal trainer, steam, sauna and the like;

(iii) accommodation and other services provided in a hotel, the rate or charges for which, including the charges for air cooling, air conditioning, radio, music, extra beds, television and the like, is seven hundred fifty

rupees per room per day or more, whether such charges are received collectively or separately per room per day;

- (iv) facilities or services provided in a spa which includes beauty treatment, manicure, pedicure, facial, laser treatment, massage shower, hydrotherapy, steam bath, saunas or cuisine, medispa and the like;";

- (viii) after clause (l), the following clause shall be inserted, namely :—

"(la) "proprietor" means the owner of an establishment, jointly or severally, and includes partners, management, trust, company, firm or anybody who is for the time being in charge of the management of the establishment;";

- (ix) for clause (m), the following clause shall be substituted, namely :—

"(m) "receipt" means the amount of monetary consideration received or receivable by a proprietor or by his agent for any luxury provided in the establishment;";

- (x) for clause (n), the following clause shall be substituted, namely :—

"(n) "registered proprietor" means a proprietor registered under section 8 of this Act;";

- (xi) after clause (o), the following clause shall be inserted, namely :—

"(oa) "spa" means a building or part of building or space where facilities or services for beauty treatment or manicure or pedicure or facials or laser treatment or massage or shower or hydrotherapy or steam bath or saunas or cuisine or medispa or the like is provided;";

- (xii) for clause (p), the following clause shall be substituted, namely :—

"(p) "tax" means the tax levied or leviable on turnover of receipts of an establishment and payable under this Act including any penalty, interest, fine, composition money, sum forfeited or any other charge levied or leviable under this Act;";

- (xiii) for clause (q), the following clause shall be substituted, namely :—

"(q) "tariff" means the charges levied or leviable by a proprietor for providing any luxury;";

- (xiv) for clause (r), the following clause shall be substituted, namely :—

"(r) "turnover of receipts" means the aggregate of amount of valuable consideration received

or receivable by a proprietor in respect of any luxury;";

3. Amendment of Section 3.—In the principal Act, for Section 3, the following shall be substituted, namely :—

"3. Incidence and levy of tax.—(1) Subject to other provisions of this Act, every proprietor,—

(a) registered under this Act; or

(b) required to be registered under this Act;

shall be liable to pay tax on his turnover of receipts calculated in accordance with this Act, at the time and in the manner provided in this Act.

(2) There shall be levied a tax on the turnover of the receipts of a proprietor at a rate not exceeding fifteen per cent to be notified by the Government from time to time and different rates may be notified for different class of luxuries :

Provided that, where the charges are levied otherwise than on daily basis or per room then the charges for determining the tax liability under this section shall be computed proportionately for a day and per room based on the total period of occupation of the accommodation for which the charge are made according to rules or practice of the hotel.

(3) In case, in addition to the charges for providing luxury, service charges are levied and appropriated by the proprietor and not paid to the staff, then, such charges shall be deemed to be part of the turnover of receipts for the purpose of levy of tax under this Act.

(4) In case luxury provided in a hotel to any person (not being an employee of the proprietor) is not charged at all, or is charged at a concessional rate, nevertheless there shall be levied and collected the tax on such luxury, at the rate specified in sub-section (2), as if full charges for such luxury were paid to the proprietor.

(5) The tax shall not be levied and payable in respect of turnover of receipts for supply of food, drinks and goods such as cosmetics, medicines, nutritional supplements etc., on the sale of which the proprietor is liable to pay tax under the Delhi Value Added Tax Act, 2005.

(6) For the purposes of this Act, tax collected separately by the proprietor shall not be considered to be part of the receipt or the turnover of receipts of the proprietor."

4. Amendment of Section 8.—In the principal Act, in Section 8, sub-section (1) shall be renumbered as sub-section (7), the following sub-section shall be inserted as sub-section (1), namely :—

"(1) Every proprietor whose turnover of receipts for providing any luxury and charges incidental thereto, calculated from the commencement of any year first exceeds, within such year the threshold value as specified below, against the respective luxury, shall, from the very next day, be required to get himself registered under this Act :

S.No.	Luxury	Threshold Value (in Rupees)
1.	Banquet Hall facilities	five lac
2.	Gymnasium/Health Club	five lac
3.	Hotel accommodation with tariff Rs. 750 per day per room or more	nil
4.	Spa	five lac

Provided that a proprietor, who is engaged in business of providing any luxury, other than that of accommodation in a hotel having tariff of rupees one thousand or more per room per day, and whose turnover in the previous year or in the year of commencement of

the Delhi Tax on Luxuries (Amendment) Act, 2012 before the date of commencement, exceeds the threshold values specified above shall be liable for registration from the date of commencement of the aforesaid Act.

5. Substitution of the word "hotel".—In the principal Act, for the words "hotel", "a hotel" and "hotels" wherever they occur, except in Section 2, Section 3 and sub-section (1) of Section 8, the words "establishment", "an establishment" and "establishments" shall be substituted, respectively.

6. Substitution of the word "hotelier".—In the principal Act, for the word "hotelier", wherever it occurs, except in Section 2, Section 3, and sub-section (1) of Section 8, the word "proprietor" shall be substituted.

CHANDER SHEKHAR, Spl. Secy.